

एक नये सूरज की तलाश

जिसकी रौशनी
फुटपाथ पर चलते हुए
अचानक किसी पर पागलपन छा जाने की
प्रक्रिया का रहस्य खोल दे

इस समय एक नये सूरज की
तलाश जारी है जो पसीने की `बदबू' को
इंसानियत की ‘खुशबू’ में बदल सके

जिसकी किरणें
हर गहन गुहा दुर्गम दुस्तर तक पहुँचे
जिसकी रौशनी
फुटपाथ पर चलते हुए
अचानक किसी पर पागलपन छा जाने की
प्रक्रिया का रहस्य खोल दे

जो दिखा सके सारा परिदृश्य
छीले-छाँटे वर्त्तमान और तय करे आदमी का भविष्य

जिसके ताप से
हर उत्तुंग हिम-शिखर पिघलकर पानी-पानी हो जाये
पानी जो खेत-खेत, कुँआ -कुँआ जाये
खेत जिसमें निरोग फसल शान से लहराये

सच इस समय
उस सूरज की तलाश जारी है
जिसका उजाला जंगल के अँधेरों के हाथ न बिके
जो पसीने की ‘बदबू’ को इंसानियत की ‘खुशबू’ में बदल सके